जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

त्याग ज्ञान में ही होता है अर्थात् पर को पर जानकर उसमें ममत्वभाव तोड़ना ही त्याग है।
-धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ-118

वर्ष : 25, अंक: 3 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मई (प्रथम) 2002 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. अनुभवप्रकाश जैन एवं पं. संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(99 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

वीतराग की वाणी शुद्ध कारणपरमात्मा को उपादेय बतानेवाली है, और वह जिनसूत्र सम्यग्दर्शन का बहिरंग निमित्त है, जो स्वयं अन्तर्मुख होकर शुद्ध कारण परमात्मा को उपादेयरूप से अंगीकार करता है, उसे वह वाणी बाह्य निमित्त है। देखो ! जिनसूत्र कैसे होते हैं ? यह बात भी इसमें आ गई है। जो अपने शुद्ध आत्मा को ही उपादेय बताता है, उसके आश्रय से ही धर्मलाभ की बात करता है, वही जिनसूत्र है और ऐसा जिनसूत्र ही सम्यक्त्व में बाह्य निमित्त है। इसके अलावा जो शास्त्र पराश्रयभाव से लाभ होना कहते हैं, वे वास्तव में जिनसूत्र नहीं हैं और वे सम्यक्त्व में निमित्त भी नहीं हैं। शास्त्रों का तात्पर्य तो वीतरागता है और वह वीतरागता अन्तर के शुद्ध आत्मा के अवलम्बन से प्रकट होती है। अत: ऐसे शुद्ध आत्मा का अवलम्बन करानेवाली जिनवाणी ही सम्यक्त्व में निमित्त है।

सम्यग्दर्शन अन्तरस्वभाव के अवलम्बन से ही प्रकट होता है और जिनसूत्र भी उस स्वभाव का ही अवलम्बन करने को कहता है। अत: सम्यग्दर्शन का बाह्य निमित्त जिनसूत्र है और उस जिनसूत्र के द्वारा कहे हुये शुद्ध कारणपरमात्मा के स्वरूप को जाननेवाले अन्य मुमुक्षुजन उस सम्यक्त्व के अंतरंग हेतु हैं।

जिनसूत्र जैसा शुद्धात्मा कहता है, वैसे शुद्धात्मा को जो जानते हैं, उन्होंने ही वास्तव में जिनसूत्र को जाना है। मात्र जो शास्त्र के शब्द को जानता है; परन्तु उसमें कहे हुये शुद्धात्मा को नहीं जानता है, वह जीव वास्तव में जिनसूत्र को जानता ही नहीं है, इसप्रकार जिनसूत्र के जाननेवाले ऐसे सम्यग्दृष्टि जीव ही दूसरे जीव को सम्यक्त्व परिणाम के अन्तरंग हेतु हैं और वहाँ जिनसूत्र बहिरंग हेतु है।

यहाँ निमित्त में अन्तरंग और बहिरंग - ऐसे दो प्रकार करके समझाया है। अपूर्व सम्यग्दर्शन प्रकट करनेवाले जीव को अकेले शास्त्र के शब्द ही निमित्त नहीं होते हैं; परन्तु उस शास्त्र का आशय बतानेवाले सम्यग्दृष्टि भी निमित्तरूप से होते ही हैं - ऐसा यहाँ बताया है। वास्तव में तो अन्य सम्यग्दृष्टि पुरुष भी अपने से भिन्न हैं; परन्तु उस जीव का अन्तरंग अभिप्राय पकड़ना वह अपने सम्यक्त्व का कारण है; अत: उपचार से उस जीव को भी सम्यग्दर्शन का अन्तरंग हेतु कहा है। शास्त्र के शब्द तो अचेतन हैं और यह सम्यग्दृष्टि जीव तो अपने सम्यक्त्व परिणाम से परिणमित हुआ है; अत: शास्त्र की अपेक्षा उस निमित्त की विशेषता बताने के लिये **अन्तरंग** शब्द डाला है। उसके बिना मात्र शास्त्र के निमित्त से कोई जीव अपूर्व सम्यक्त्व प्राप्त करता है - ऐसा नहीं बनता है। यह देशनालब्धि का अबाधित नियम है। **(क्रमश:)**

सम्पादकीय -

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन 5

- रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

सर्ग 6 में ही कहा है कि - सिद्ध भगवान शरीर रहित हैं, सुखरूप हैं तथा अपने ज्ञानोपयोग व दर्शनोपयोग के द्वारा अनन्त पर्यायों से युक्त समस्त लोक और अलोक को एक साथ जानते हुए सदा सुख से स्थिर रहते हैं। मूल श्लोक इसप्रकार हैं -

अशरीरा: सुखात्मान: सिद्धा जीवधनायुता:।
साकारेणोपयोगेन निराकारेण चात्मन: ।।136।।
सर्वलोकमलोकं च संततानन्त पर्ययम् ।
जानन्त: सह पश्यन्तस्तिष्ठन्ति सुखिन: सदा ।।137।।

जो व्यक्ति सर्वज्ञता के स्वरूप को एकान्तरूप से निश्चय से आत्मज्ञ ही मानते हैं और उनकी त्रिकालज्ञता को व्यवहारनय का विषय कहकर अभूतार्थ मानते हैं, उन्हें इन प्रथमानुयोग के प्रमाणों को भी देखना चाहिये। सिद्ध भगवान वस्तुत: त्रिकालज्ञ हैं लोकालोक के सर्वद्रव्यों, उनके अनन्त गुणों, प्रत्येक गुण की प्रतिसमय होनेवाली सहभावी एवं क्रमभावी पर्यायों को एक साथ जानते हैं। इसमें किंचित भी शंका की गुंजाइश नहीं है। इस सर्ग के अन्त में आचार्यदेव ने अगले सप्तम सर्ग में काल द्रव्य के कहने के प्रतिज्ञा वाक्य के साथ धर्मध्यान की प्रेरणा देते हुए 140 श्लोकों में यह सर्ग समाप्त किया है।

इस सातवें सर्ग के श्लोक 1 से 21 तक काल द्रव्य का निरूपण करते हुये इसके दो भेदों का आध्यात्मिक दृष्टिकोण से स्पष्टीकरण किया गया है। इस प्रथमानुयोग के ग्रन्थ में भी आचार्यदेव कहते हैं कि - वर्तना लक्षण से युक्त निश्चय काल द्रव्य धर्म, अधर्म एवं आकाश द्रव्य की भाँति ही समस्त द्रव्यों की वर्तना में - षट्गुणी हानिवृद्धिरूप परिणमन में निमित्त हैं। जीव और पुद्गलों का परिणमन नाना प्रकार से होता है। समस्त पदार्थों जो परिणाम क्रिया परत्व और अपरत्व रूप परिणमित होते हैं, वे अपने-अपने अन्तरंग तथा बहिरंग निमित्तों से सब ओर से प्रवृत्त होते हैं। उन अन्तरंग-बहिरंग निमित्तों में अन्तरंग निमित्त स्व ---------- तो वस्तु की अपनी योग्यता ही है, जो सदा उसमें स्थित रहती है और बाह्य निमित्त निश्चय काल द्रव्य है - तत्त्वदर्शी आचार्यों ने ऐसा निश्चय किया है।

वे कालाणु परस्पर प्रवेश रहित रत्नों की राशि की भाँति पृथक्-पृथक् समस्त लोक करे व्याप्तकर राशिरूप में स्थित हैं। द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा कालाणुओं में विकार नहीं होता। इसलिये उत्पाद-व्यय से रहित होने के कारण वे कथंचित नित्य है और अपने स्वरूप में स्थित हैं। परन्तु अगुरुलघुत्व गुण के कारण उन कालाणुओं में प्रत्येक समय परिणमन होता रहता है तथा परपदार्थों के सम्बन्ध से वे विकारी हो जाते हैं; इसलिये पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा कथंचित् अनित्य भी है। **(क्रमश:)**

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार

46

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

डॉ. भारिल्ल का 2002 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। अमेरिका की यह उनकी 19 वीं विदेश यात्रा है। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्नस्थानों पर रहते हों, उन्हें वे सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए उन लोगों के फोन एवं फैक्स नम्बर भी दिये जा रहे हैं, जिनके यहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	डलास	अतुल खारा (घर) 972-867-6535 (ऑ.)972-424-4902	30 मई से 4 जून
2.	लासएंजिल्स	नरेश पालकीवाला (घर) 562-404-1729 (ऑ.)626-814-8425 626-814-8225	5 जून से 10 जून
3.	सेनफ्रांसिस्को	हिम्मत डगली (घर) 510-745-7468	11 जून से 16 जून
4.	सियेटल	प्रकाश जैन (घर) 425-881-6143 (ऑ.) 425-707-5308	17 जून से 23 जून
5.	मियामी	महेन्द्र शाह (घर) 305-595-3833 (ऑ.)305-371-2149	24 जून से 27 जून
6.	Ⓐ वाशिंगटन डी.सी. Ⓑ फेयरफेक्स	नरेन्द्र जैन (घर) 703-426-4004 (फैक्स) 703-321-7744 रजनीभाई गोसालिया (घर) 301-464-5947	28 जून से 3 जुलाई
7.	न्यूजर्सी	राजेन्द्र जैन (घर) 732-424-3914 (ऑ.) 732-470-6719 नरेन्द्र जैन (घर) 703-426-4004	4 से 6 जुलाई
8.	Ⓐ केन्टुकी Ⓑ कोलम्बस	महावीर शाह 606-297-2626 राकेश जैन 614-459-1025 चन्द्रा जैन (घर) 440-974-8003	7 से 14 जुलाई
9.	शिकागो	निरंजन शाह 847-330-1088 विपिन भायाणी (घर) 815-939-0056 (ऑ.)815-939-3190 (फैक्स) 815-939-3159	15 से 21जुलाई
10.	ह्यूस्टन	भूपेश सेठ (घर) 281-261-4030 (ऑ.)713-339-3778 प्रतिमा देसाई (घर) 281-859-3661	22 से 28 जुलाई

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की तरह उन्हीं के शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिंदवाड़ा भी धर्मप्रचारार्थ दिनांक 30 मई से 14 जुलाई 2002 तक अमेरिका जा रहे हैं। उनका वहाँ कार्यक्रम इसप्रकार है ह्न 30 मई को मुंबई से प्रस्थान करके 5 जून तक मियामी, 6 जून से 10 जून तक अटलांटा, 11 जून से 17 जून तक ह्यूस्टन, 18 जून से 23 जून तक डलास, 24 जून से 3 जुलाई तक टोरंटो, 4 जुलाई से 7 जुलाई तक न्यूजर्सी। अमेरिका प्रवास के दौरान जिन स्थानों पर डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे, उन्हीं स्थानों पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री भी ठहरेंगे। अटलांटा और टोरंटो ही दो स्थान हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल नहीं जा रहे है; अत: वहाँ पण्डित अभयकुमारजी से निम्न स्थान पर सम्पर्क किया जा सकता है ह्न

अटलांटा- मधुबेन सेठ - (नि.) 404-2350627 **टोरंटो** ह्न रमेश जैन - (नि.) 416-6268078

मई माह में आनेवाली 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

6 मई - भगवान मुनिसुव्रतनाथ तपकल्याणक
11 मई - भगवान नमिनाथ तपकल्याणक
13 मई - भगवान कुन्थुनाथ जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक
18 मई - भगवान अभिनन्दननाथ गर्भकल्याणक
19 मई - भगवान अभिनन्दननाथ मोक्षकल्याणक
21 मई - भगवान सुमतिनाथ तपकल्याणक, भगवान पद्मप्रभ एवं भगवान महावीर का ज्ञान कल्याणक
24 मई - भगवान धर्मनाथ का ज्ञानकल्याणक

तीन लोक मण्डल विधान सम्पन्न

इन्दौर : यहाँ साधनानगर स्थित पंचबालयति बिहरमान बीस तीर्थंकर जिनालय में दिनांक 12 से 14 अप्रैल 2002 तक तीन लोक मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भगवान महावीर द्वारा का शिलान्यास किया गया।

आयोजन में ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री एवं पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री परतापुर एवं पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर द्वारा सम्पन्न कराये गये।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) मई (प्रथम) 2002
आई. आर. / R. J. 3002/02

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 515458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर